साहित्योत्सव 2016
साहित्योत्सव
festival of letters
15-20 February 2016

दैनिक समाचार बुलेटिन

शुक्रवार, 19 फ़रवरी 2016

राष्ट्रीय संगोष्ठी

गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव

साहित्योत्सव के दौरान 'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता तथा अलगाव' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन पूर्वाह्न 11.00 बजे हुआ। भारतीय इतिहास और संस्कृति की प्रख्यात अध्येता कपिला वात्स्यायन ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध विदुषी कपिला वात्स्यायन ने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू एक बड़े दार्शनिक रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि अस्पृश्यता के लिए गाँधी और अम्बेडकर दोनों के विरोध के तरीक़े अलग थे। नेहरू पूर्व और पश्चिमी संस्कृति के संयोजक के रूप में देखे जा सकते हैं। उन्होंने कई उदाहरण देते हुए गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू के व्यक्तित्व और सोच की विशिष्टता पर प्रकाश डाला।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि तीनों में भले ही कुछ मतभेद थे लेकिन उनका लक्ष्य एक था -- भारतवर्ष की उन्नति। नेहरू कभी कट्टर गाँधीवादी नहीं रहे। उन्होंने गाँधी को उद्धृत करते हुए कहा कि सत्य निर्गुण होता है, अज्ञेय होता है। सगुण और गेय तब बनता है जब सत्य अहिंसा का वस्त्र धारण करता है। उन्होंने अस्पृश्यता के संबंध में महात्मा गाँधी की उक्ति की याद दिलाई -- ''अस्पृश्यता को हिंदू धर्म अगर धार्मिक रूप देगा तो मैं हिंदू धर्म छोड़ दूँगा।'' उन्होंने आगे कहा कि गाँधी वर्णाश्रम के समर्थक थे। उनका मानना था कि वर्णाश्रम से जीविका की समस्या कुछ हल हो सकती है। अम्बेडकर वर्णाश्रम के सख़्त विरोधी थे। गाँधी ने पूरे देश की यात्रा की थी, जिसका मूल उद्देश्य था -- अस्पृश्यता का विरोध। उन्होंने कहा कि गाँधी विलक्षण भविष्य वक्ता हैं। उन्होंने गाँधी के प्रति विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि गाँधी और उनकी सोच लोगों को अव्यावाहारिक और तात्कालिक भले लगती हो लेकिन उन्हें दुनिया के अनेक महान लोगों ने अपना रोल मॉडल स्वीकार किया है। गाँधी की प्रासंगिकता बनी रहेगी।

संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् कृष्ण कुमार ने अपने सुचिंतित वक्तवय में कहा कि गाँधी एक कल्पना के

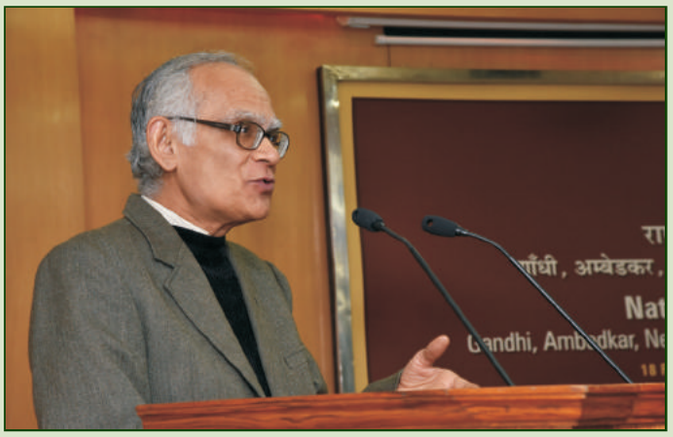

आज के कार्यक्रम

भारत की अलिखित भाषाओं पर परिसंवाद : पूर्वाह्न 11.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

सांस्कृतिक कार्यक्रम : ओथेलो की 'कथकली' शैली में प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

साधक थे। वह कल्पना 'राष्ट्र' की नहीं थी, वह कल्पना 'स्वाधीन मनुष्य' की थी। गाँधी ने उस 'स्वाधीनता' को 'स्वदेशी' कहा है। गाँधी दरअसल 'आत्मधीनता' की बात कर रहे थे। 'स्वराज' वास्तव में 'आत्मराज' है। उन्होंने कहा कि गाँधी की कल्पना को विधान रूप देने वाले अम्बेडकर हैं। संविधान, जो स्वयं एक कल्पना थी, उसे प्रशासनिक रूप से आजमाने वाले नेहरू हैं। इस प्रकार तीनों ही कल्पना के साधक हैं। कृष्ण कुमार ने कहा कि तीनों में मतभेद के बावजूद एक सहमत होते दीखते हैं क्योंकि मसला जीवन का है क्योंकि मसला स्वतंत्रता का है। स्वतंत्रता शब्दों से संरक्षित होती है। जहाँ शब्द चुकते हैं वहीं अस्त्र शुरू होते हैं।

अपने बीज वक्तव्य में प्रख्यात ओड़िया और अंग्रेज़ी लेखक तथा अकादेमी के महत्तर सदस्य मनोज दास ने महाड़ सत्याग्रह का हवाला देते हुए अम्बेडकर की अहिंसा के प्रति आस्था को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि समाजार्थिक मुद्दों पर तीनों ही चिंतकों का दृष्टिकोण हमें तत्कालीन समाज की दशा-दिशा को समझने में सहायक तो है ही, साथ ही हम आज की अनेक चुनौतियों से भी उनके विचारों द्वारा निराकरण प्राप्त कर सकते हैं।

इसके पूर्व अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि गाँधी, अम्बेडकर और नेहरू आधुनिक भारत के निर्माता हैं। उन्होंने कहा कि ये तीनों ही महापुरुषों के पास एक राष्ट्र के निर्माण के लिए सम्यक दृष्टि थी। क्या हम जैसा गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू चाहते थे, वैसा राष्ट्र बना पाए हैं? तीनों युगपुरुषों की सोच में क्या एकता है और विभिन्न मुद्दों पर क्या मतभेद हैं, इन्हें समझने के लिए इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।हमारा उद्देश्य है कि युवा पीढ़ी इन तीनों महापुरुषों के व्यक्तित्व और विचारों को और ठीक से समझ पाए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने समाहार वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'स्वतंत्रता और अहिंसा' विषय पर आलेख पाठ किए गए। इस सत्र की अध्यक्षता गुजराती के प्रख्यात रचनाकार सितांशु यशश्चंद्र ने की। नंदकिशोर आचार्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि यदि कोई भी व्यक्ति या समाज हिंसा के किसी भी सूक्ष्म या स्थूल, प्रत्यक्ष अथाव अप्रत्यक्ष रूप के दबाव में है तो उसे स्वतंत्र नही कहा जा सकता। इसलिए केवल राजनीतिक पराधीनता ही नहीं, किसी भी प्रकार का शोषण, दमन, उत्पीड़न और अपमान - प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष - हिंसा की है; और इनसे ग्रस्त समाज को स्वतंत्र समाज कहना - क्योंकि वह विदेशी शासन से मुक्त है - एक प्रवंचना ही होगी। नंद किशोर आचार्य ने मौजूदा समस्याओं की ओर भी तीनों विभूतियों के विचारों के आधार पर प्रकाश डाला।

अपने वक्तव्य में पुंडलीक नारायण नायक ने कहा कि गाँधी मानते थे कि अहिंसा इंसानी समाज का क़ानून है, जो जानवरी ताक़त से श्रेष्ठ है। गाँधी की संकल्पना के केंद्र में ग्राम स्वराज्य रहा है जिसे अहिंसक समाज के लिए वे आवश्यक मानते थे। इसमें मशीन का स्थान गौण था और मनुष्य के सक्रिय सहभाग से स्वपोषित चिरंतन विकास से समाज (self-sustained development) की बात थी।

अम्बेडकर और नेहरू दोनों गाँधी से एकदम भिन्न मत रखते थे। अपने जीवन काल के अनगिनत कटु अनुभव के कारण वे गाँव समाज को हर प्रकार की बुराई तथा गंदगी का केंद्र मानते थे। इसलिए उन्होंने दलितों को गाँव छोड़ने तथा शहर जाकर मशीन अपनाने की प्रेरणा दी।

गाँधी लार्ड मैकाले की अंग्रेज़ी शिक्षा को ग़ुलामी की शिक्षा मानते थे। शिक्षा को भारतीय भाषा और स्वावलंबन से जोड़ने के लिए 'नई तालीम' का माडॅल देश के समक्ष रखा। नेहरू तथा अम्बेडकर को लार्ड मैकाले प्रणीत शिक्षा से कोई परहेज़ नहीं था।

बात को आगे बढ़ाते हुए अनुराधा राय ने अपने वक्तव्य में कहा कि गाँधीवाद संघर्ष का एक दर्शन है। गाँधियन प्रोजेक्ट को अगर हम यथार्थ रूप नहीं दे पाते तो यह हमारी अक्षमता है और इससे हमारी क्षति होगी। द्वितीय सत्र में पश्चिम के प्रति नज़रिया विषय पर व्याख्यान दिए गए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी रचनाकार भालचंद्र नेमाडे ने की तथा मालचंद तिवाड़ी और कुणाल चट्टोपाध्याय ने आलेख पाठ किए।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्व और उत्तरी लेखक सम्मिलन

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी पूर्वोत्तर एवं उत्तरी क्षेत्र के लेखकों को विशेष प्रतिनिधित्व देने के लिए 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात असमिया लेखक लक्ष्मीनंदन बोरा ने कहा कि उत्तर-पूर्व के बहुत से लेखक शेष भारत के रचनाकारों को पढ़ रहें हैं और सिख रहें हैं। आज उनका लेखन शिल्प और कथ्य के स्तर पर काफी परिपक्व है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि जितनी विविधता उत्तर-पूर्व और उत्तरी भाषाओं और संस्कृति में पाई जाती है उतनी कहीं नहीं है। उन्होंने प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में हाशिए की भाषाओं पर संकट को उचित जगह न मिल पाने के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि उत्तर-पूर्व और उत्तरी साहित्य आज साहित्य अकादेमी के प्रमुख एजेंडे में है। "मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?" सत्र की अध्यक्षता रीता चौधुरी ने की। ॲरविंद उज़िर (बोडो), वीरेंद्र जैन (हिंदी), विक्रम संपत (अंग्रेज़ी), लाइरेनलकपम इबेम्हल देवी (मणिपुरी) और कृष्ण कुमार तूर (उर्दू) ने अपने वक्तव्य दिए।

कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता एल. जॅयचंद्र सिंह ने की और मणिका देवी (असमिया) और रूप सिंह चंदेल (हिंदी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। अगला सत्र काव्य-पाठ का था जिसकी अध्यक्षता लीलाधर मंडलोई ने की। प्राणजित बोरा (असमिया), सुशील बेगाना (डोगरी), अब्दुल रशीद शाद (कश्मीरी), लोंड्जम इबोतोम्बी सिंह (मणिपुरी), ऐफ़ लालज़ुइथाङ (मिज़ो), कृतिमणि खतिवाड़ा (नेपाली), सतीश गुलाटी (पंजाबी), चंद्र भूषण झा (संस्कृत) और यशोदा मुर्मू (संताली) ने अपनी कविताएँ सुनाईं। सत्र का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश ने की।

आमने-सामने

पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत

साहित्योत्सव में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम 'आमने-सामने' में आज 7 पुरस्कृत लेखकों से प्रतिठित साहित्यकारों और विद्वानों से बातचीत की। इस बातचीत से लेखकों की रचना प्रक्रिया के कई पहलू सामने आए। अरुण खोपकर (मराठी लेखक) से कुमार

केळकर, के.आर. मीरा (मलयाळम् लेखिका) से मीना टी. पिळ्ळै, कुल सैकिया (असमिया लेखक) से स्तुति गोस्वामी, के.वि. तिरुमलेश(कन्नड लेखक) से विवेक शनबाग, साइरस मिस्त्री (अंग्रेज़ी लेखक) से अर्शिया सत्तार, वोल्गा (तेलुगु लेखिका) से जे.एल. रेड्डी और रामदरश मिश्र (हिंदी लेखक) से सुरेश ऋतुपर्ण ने बातचीत की। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी की उपसचिव रेणु मोहन भान ने किया।

निज़ामी बंधुओं द्वारा क़व्वाली की प्रस्तुति

साहित्योत्सव 2016 कार्यक्रम

20 फ़रवरी 2016 (शनिवार)

संगोष्ठी : 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ', पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अंबेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ, पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति, सायं 6.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रतिदिन पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक, रवींद्र भवन लॉन

साहित्योत्सव के लाइव वेबकास्ट के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in देखें

साहित्य अकादेमी

रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001

फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28

ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

वेब-साइट : www.sahitya-akademi.gov.in